दीनेश्वर लाल 'आनन्द'

दीनेश्वर लाल 'आनन्द' क जन्म सहरसा जिलाक महिला गाममे भेल छलनि, सितम्बर 1936 ई. मे । हिनक जन्म भेलनि आ एकहन्तरि वर्षक आयुमे मार्च, 2007 ई. मे ई देह त्याग कयलनि।

हिनक सम्पूर्ण जीवन संघर्षमय रहल। बी.ए. , एम. ए. ई स्वतंत्र छात्रक रूपमे कयलनि। तकरा बाद पि.एच. डी. भेलाह। हिनक कर्मठता एवं लगनशीलताक परिणाम छल जे ई बिहार सरकारक संयुक्त सचिवक पदसँ सेवा-निवृत भेलाह। जन-शिक्षा साधन केन्द्र 'दीपायतन' क निदेशक सेहो छलाह।

दीनेश्वर लाल 'आनन्द' मुख्यतः हिन्दीमे लिखलनि। 'बालक' आ 'चुन्नू-मुन्नू' क यशस्वी सम्पादकक रूपमे हिनक ख्याति भेलनि। बाल-साहित्यक लगभग दू दर्जन पोथीक ई रचयिता छथि। एकर अतिरिक्त विद्यापति विषयक ग्रन्थक सम्पादन आ लेखनमे सेहो हिनक रुचि छलनि। विद्यापति-पदावलीक व्याख्यातारूपमे हिनक उल्लेखनीय योगदान अछि।

डॉ. आनन्द पर्यावरण विशेषज्ञक रूपमे सेहो जानल जाइत छथि। 'वन' नामक हिनक पद्य-रचना बालोपयोगी साहित्यमे बेस चर्चित अछि। प्रस्तुत निबन्धमे पर्यावरणक स्थिति आ समस्या तथा ओकर सुधारक उपाय एवं आवश्यकताक प्रसंग हिनक कथ्य विचारणीय अछि।

पर्यावरण

मनुष्य हो वा पशु, गाछ-वृक्ष हो वा घास-पात- सभमे जीवन होइत छैक, जीवनी शक्ति होइत छैक। एहि जीवनी-शक्तिक सुरक्षाक हेतु एक प्रकारक वातावरणक आवश्यकता होइत छैक । ओकरे पर्यावरण कहल जाइत छैक।

पर्यावरणक महत्त्व अनादि कालसँ अछि। वेदमे कामना कयल गेल अछि -मधुवाता ऋतायते ..... मधुब्रन्ति सिन्धवः ..... वनस्पतिर्मधुवान .....। बसात, पानि तथा वनस्पति-प्रकृतिक ई तीनू वस्तु प्रत्येक जीव लेल जरूरी अछि। ई तीनू पर्यावरणक अंग थिक। तीनूक स्वच्छता प्रत्येक प्राणीक अस्तित्व-रक्षाक अनिवार्य आधार थिक।

प्रत्येक जीव-जन्तु लेल सभसँ आवश्यक वस्तु अछि वायु। वायु बिना केओ जीवित नहि रहि सकैत अछि। तँ वायुक स्वच्छता पर ध्यान देब परमावश्यक। हमर पुरखालोकनि एहि बात पर विशेष ध्यान दैत छलाह। वातावरणकेँ स्वच्छ रखबाक हेतु घर-घरमे होम करबाक परिपाटी छल। होममे ओहने वस्तु सभ जराओल जाइत छलैक जाहिसँ वातावरण शुद्ध होइत छल। किन्तु, पहिने लोकक संख्या कम छल। कल-कारखाना आ स्कूटर-कारसँ वायुमंडल प्रदूषित नहि होइत छल। आजुक युगमे वायुमंडलकेँ प्रदूषणमुक्त राखब जतबे आवश्यक अछि ततबे कठिन।

हमसभ जनैत छी जे बसातमे अनेक प्रकारक गैस मिलल अछि। एहिमे प्रमुख अछि आक्सीजन, कार्बनडायआक्साइड तथा नाइट्रोजन । आक्सीजन मनुष्यक हेतु आवश्यक अछि आ कार्बनडायआक्साइड गाछ-वृक्ष लेल। मनुष्य साँस द्वारा वायु अपना भीतर लऽ जाइत अछि। फेफड़ामे जा कऽ वायु देहक लिधुरकेँ साफ करैत अछि। ओकरा विकारमुक्त करैत अछि। विकृत वायु प्रश्वास द्वारा बाहर निकलि जाइत अछि। मुदा, सभ नहि निकैल पबैत अछि। कोनो रूपमे जे रहि जाइत अछि से हमर शरीरतंत्रकेँ प्रभावित करैत अछि आ हम विभिन्न प्रकारक रोगसँ ग्रस्त भऽ जाइत छी। प्रदूषित वायुमे साँस लेलासँ दम फुलऽ लगैत अछि। धूआँ, धूरामे मिश्रित कण, सड़ल-गलल वस्तुक गन्ध आदि हवा -बसातकेँ दूषित करैत अछि। जतऽ-ततऽ मल-मूत्र त्याग करब वायुक प्रदूषणक मुख्य कारण थिक। तेँ एहि सभ बात पर ध्यान देब

आवश्यक अछि। पैखाना, मोड़ी आ पानिसँ भरल छोट-मोट खाधि सभकेँ झाँपि कऽ रखलासँ वायु प्रदूषित होयबासँ बचैत अछि। घरमे पैघ-पैघ खिड़की लगायब, सुतैत काल खिड़की सभकेँ खुजल राखब तथा भोरक स्वच्छ वायुमे टहलब स्वास्थ्यक हेतु लाभकारी अछि। पेट्रोल-डीजलसँ चलऽवला वाहनकेँ नियमानुसार धूआँसँ मुक्त राखब नितान्त आवश्यक अछि।

वायुक बाद दोसर सभसँ महत्त्वपूर्ण वस्तु थिक जल। जलकेँ जीवन सेहो कहल जाइत अछि। प्रत्येक जीव-जन्तु आ गाछ -वृक्षकेँ जलक आवश्यकता अछि। पहिने नदीक जल शुद्ध रहैत छल, तेँ नदीमे स्नान करब पवित्र काज मानल जाइत छल। मुदा आब से बात नहि अछि। अनेक-प्रकारक गंदगी नदीक पानिमे मिलैत अछि आ ओकरा दूषित कऽ दैत अछि। कल-कारखानक गदौस बहि कऽ नदीमे खसैत अछि आ नदीक पानिकेँ ओ विषाक्त कऽ दैत अछि। गंगा सन पवित्र ओ विशाल नदीक पानि सेहो प्रदूषित भऽ गेल अछि।

कहबी छैक जे पानि पीबी छानि कऽ आ बात बाजी जानि कऽ। कहबाक तात्पर्य ई जे अशुद्ध जलक उपयोग हानिकारक थिक। जलक महत्त्वकेँ ध्यानमे राखि कऽ हमर सभक पुरखालोकनि पोखरि आ इनार खुनबैत छलाह। पोखरि-इनार खुनायब प्रतिष्ठाक कार्य बुझल जाइत छल। मिथिलामे कतेक राजा तेहन-तेहन पोखरि खुनौने छथि, जाहि कारणेँ हुनकालोकनिक नाम आइ धरि लोक लैत अछि। रजोखरि पोखरि नामी अछि। मिथिलांचल नदीमातृक प्रदेश थिक। तेँ एहिठाम जलाशयक प्रचुरता अछि। एकर उपयोग गामक लोक करैत अछि। किन्तु, आइ-काल्हि गामो घरमे पोखरि-इनारक पानिकेँ उपयोगमे आनब लोक छोड़ने जा रहल अछि। तकर मुख्य कारण एहि सभ जलाशयक दूषित होयब थिक। आब कलक पानि बेसी शुद्ध बूझल जाइत अछि। मुदा, कलक जलकेँ सेहो विभिन्न प्रकारेँ स्वच्छ बना कऽ पीबाक आवश्यकता होइत अछि। तात्पर्य ई जे वायु जकाँ जल सेहो जीव मात्रक लेल आवश्यक अछि आ तेँ जलाशय आ जलागारक स्वच्छता पर ध्यान देब पर्यावरणक निर्मलता हेतु अनिवार्य थिक।

पर्यावरणकेँ स्वच्छ रखबाक लेल सर्वाधिक उपयोगी अछि गाछ-वृक्ष । पहिने लोक गाछ-वृक्ष आ वनक महत्त्व खूब जनैत छल । तेँ घर तथा गामक समीप खूब गाछ लगबैत छल। एक व्यक्तिक लेल दस गाछ लगायब जरूरी बूझल जाइत छल। एक वृक्ष लगा देलासँ दस पुत्र होयबाक, पुण्य होइत छलैक आ एक व्यक्ति लेल दस गाछ लगायब आवश्यक छलैक। एहि प्रकारेँ वृक्षारोपणकेँ धार्मिक भावनाक संग जोड़ि देल गेल छल।

हम सब जनैत छी जे मनुष्य आक्सीजन लैत अछि आ कार्बनडायआक्साइड छोड़ैत अछि। गाछ-वृक्ष कार्बनडायआक्साइड लैत अछि। आ आक्सीजन छोड़ैत अछि । एहि प्रकारेँ मनुष्य अथवा प्रत्येक जीव-जन्तुकेँ गाछ-वृक्षसँ अन्योनाश्रित सम्बन्ध छैक । यदि, वायुमण्डलमे ऑक्सीजन नहि रहतैक तँ मनुष्यो नहि रहत। आक्सीजनक उपस्थिति गाछ-वृक्षक अस्तित्व पर निर्भर करैत अछि। दुखक बात अछि जे एतेक महत्त्वपूर्ण वस्तुकेँ लोक समाप्त कयने जा रहल अछि।

गाछ-वृक्षक महत्त्व मनुष्यक जीवनमे डेग-डेग पर अछि। चकला-बेलनासँ लऽ कऽ लाठी-भाला धरिमे लकड़ीक उपयोग होइत अछि। केबाड़-खिड़की, चौकी-सन्दूक, खुरपी-हांसू, कोदारि-हर-पालो आदिमे तँ लकड़ीक उपयोग होइते अछि। संगहि संग जारनिक कामे सेहो लकड़ीक उपयोग होइत अछि। जरलाक बादो लकड़ी कोइलाक रूपमे काज अबैत अछि। सिम्मरक लकड़ीसँ दियासलाइक काठी बनैत अछि, तँ देवदारूक लकड़ीसँ पेंन्सिल। जंगल एहि सब उपयोगी वस्तुकेँ उपलब्ध करयबाक, अतिरिक्त सबसँ पैघ काज करैत अछि पर्यावरणकेँ स्वच्छ रखबामे।

गाछ-वृक्ष आ वंनकेँ धार्मिक भावनाक संगहि सांस्कृतिक चेतनाक संग सेहो जोड़ि देल गेल अछि। हजारो साल पहिने लोक जंगलेमे रहैत छल। लोकक संख्या बढ़ैत गेलैक आ लोकक ज्ञानमे वृद्धि होइत गेलैक। लोक गाछ-वृक्षकेँ काटि-काटि गृह निर्माणक काज करऽ लागल। तकरा बाद चासमे सेहो ओकर उपयोग करऽ लागल। जंगलक किछु भाग एहि तरहेँ चास-वासमे परिणत भऽ गेल। जंगली लोक जखन किसान बनल तखन देखलक जे जंगलक प्रभावे वर्षा होइत अछि आ ओहिसँ उपजामे वृद्धि होइत अछि। गाछकेँ ओ सब देवता जकाँ पूजा करऽ लागल। एखनहुँ गाछ-वृक्षक पूजा करब सामान्य बात थिक। एतबे नहि, एहि तरहेँ गाछ-वृक्ष हमर धार्मिक आ सांस्कृतिक जीवनक अंग बनि गेल। ओकर महत्त्वकेँ एहि रूपेँ जीवन चर्याक संग एकात्म कऽ देल गेल जे वृक्षारोपण सहजे होइत रहय।

आजुक लोकक धार्मिक भावनाँ अथवा सांस्कृतिक चेतनामे अवमूल्यन भऽ रहल अछि। तेँ गाछ-वृक्षक महत्त्वकेँ फराकसँ बुझबाक आवश्यकता भऽ गेल अछि। वन-महोत्सव एही अतिरिक्त प्रयासक देन थिक।

एतेक धरि निश्चित जे पर्यावरणकेँ विशुद्ध रखबाक लेल वायु आ जले निर्मलता यदि

आवश्यक अछि तँ ताहि लेल सर्वाधिक आवश्यक कार्य अछि वृक्षारोपण। एहिसँ पर्यावरणकेँ स्वच्छ रखबामे सहायता पहुँचैत अछि आ आजुक औद्योगिक विकासक युगमे सेहो मनुष्यक जीवन-यापन सहज-सरल भऽ सकैत अछि। हमर सभक कर्त्तव्य थिक जे पर्यावरणक सुरक्षापर ध्यान दी आ एहि दिशामे होइत प्रयासमे सहायक बनी।

शब्दार्थ

पर्यावरण - परिवेश, परिमंडल

गदौस - गन्दगी

अवमूल्यन - गिरावट , मूल्यमे कम करब

पुरखा - पूर्वज

प्रश्न ओ अभ्यास

1. निम्नलिखितमे सही विकल्प चयन करू -

(i) कोन चीज बिना लोक एक-दू घंटो भरि जीवित नहि रहि सकैत अछि ?

(क) पानि (ख) आगि

(ग) हवा (घ) अन्न

(i) पर्यावरणकेँ स्वच्छ रखबाक लेल सर्वाधिक उपयोगी अछि -

(क) पानि (ख) अन्न

(ग) मनुक्ख (घ) गाछ-वृक्ष

2. रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू -

(i) मल-मूत्र यत्र-तत्र त्याग करब वायुक ..... मुख्य कारण थिक?

(ii) गाछ-वृक्ष हमर धार्मिक आ ..... जीवनक अंग बनि गेल।

3. निम्नलिखित वाक्यमे शुद्ध-अशुद्ध चयन करू-

(i) गाछ-वृक्षक लेल हाइड्रोजन गैस आवश्यक अछि।

(ii) वातावरणकेँ स्वच्छ रखबाक हेतु घर-घरमे होम करबाक परिपाटी छल।

4. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) वायुक बाद दोसर सभसँ महत्त्वपूर्ण वस्तु की थिक ?

(ii) मनुष्यक हेतु कोन गैस आवश्यक अछि ?

(iii) हमरा लोकनि कोन गैस छोड़ैत छी ?

(iv) पर्यावरणक तीन मुख्य अंग कोन-कोन अछि ?

(v) पर्यावरण ककरा कहल जाइछ ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) पर्यावरण पर एक निबन्ध लिखू।

(ii) वनक उपयोगिता पर अपन विचार प्रस्तुत करू।

(iii) पहिने वृक्षारोपणक कोन उद्देश्य छलैक ?

(iv) नदी ओ पोखरिक महत्त्वक वर्णन करू।

(v) आइ धार्मिक आ सांस्कृतिक चेतनाक अवमूल्यनसँ कोन समस्या उत्पन्न भऽ रहल अछि ?

6. जल, वृक्ष, वन, घर, नदी शब्दक तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखू।

गतिविधि -

(i) पर्यावरणक रक्षाक विभिन्न उपादानक नाम लिखू।

(ii) वर्षा नहि होयबाक कारणक पता लगाउ।

(iii) पानि पीबी छानि कऽ आ बात बाजी जानि कऽ लोकोक्तिक पर अपन विचार प्रकट करू।

(iv) प्रदूषित पर्यावरणक दृश्यक एक चित्र बनाउ।

(v) जनसंख्या वृद्धि पर्यावरणकेँ कोनतरहेँ प्रदूषित कऽ रहल अछि ?

निर्देश -

(i) शिक्षक वर्गमे पर्यावरण पर भाषण प्रतियोगिताक आयोजन करथि।

(ii) शिक्षक वर्गक कोनो छात्रसँ पर्यावरण संबंधी वेदवचनक पाठ कराबथि।

(iii) मिथिलांचलक प्रमुख पोखरि सभक एक सूची शिक्षक वर्गक विद्यार्थी लोकनिसँ बनाबथि।

(iv) शिक्षक छात्र-छात्रा लोकनिसँ मरुभूमिक चित्र बनबाए ओतय वृक्षारोपण कयऽ वर्षाक एक सुन्दर दृश्यक निर्माण कराबथि।